संगीत विशारद (प्रथम खण्ड)

Sangeet Visharad Part-I (Fourth Year)

तंत्रवाद्य (INSTRUMENTAL)

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) निम्नलिखित संगीत के पारिभाषिक शब्दों का अध्ययन- राग लक्षण, रागालाप, रूपकालाप, अल्पत्व, बहुत्व, सन्यास, विन्यास, लाग, डाट, गिटकिरी, देशी संगीत, मार्गी संगीत, कसबी, अताई, स्वस्थान नियम, विदारी और छूट।

(२) (क) श्रुति विभाजन के सम्बन्ध में संपूर्ण इतिहास (प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल का)।

(ख) षडज-पंचम भाव की सहायता से आन्दोलन संख्या एवं उनकी तीव्रता का निर्धारण।

(३) सितार के घरानों का इतिहास एवं वादन शैली। अन्य वाद्य यन्त्रों की वादन शैली की विशिष्टता एवं इतिहास।

(४) भातखंडे और विष्णु दिगम्बर स्वरलिपि पद्धति का विस्तृत ज्ञान एवं उनकी असुविधा एवं त्रुटियों के सम्बन्ध में अपना मत और उनके संशोधन के उपाय।

(५) गत, तोड़ा तथा झाला भातखंडे और विष्णु दिगम्बर स्वरलिपि पद्धति में लिखनें का अभ्यास।

(६) संगीत के विभिन्न विषयों पर निबन्ध।

(७) जीवनी और संगीत में योगदान-
उस्ताद हाफिज अली खां, दबीर खां तथा इनायत खां।

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित राग समूह में पूर्ण वादन शैली के साथ रजाखानी गत बजाने का अभ्यास (आलाप जोड़ अनिवार्य) निर्धारित राग- हिन्डोल, विभास, छायानट, दरबारी कान्हडा, पूरिया, बहार, शंकरा, अड़ाना और सोहिनी, मारवा, तोडी, मुलतानी।

(२) उपर्युक्त राग समूहों में से किन्ही चार रागों की मसीदखानी गत (पूर्ण वादन शैली सहित) आवश्यक।

(३) पाठयक्रम में निर्धारित राग समूहों में से निम्नलिखित किसी एक ताल में गत बजाने का अभ्यास-
रूपक, धमार एवं एकताल।

(४) निम्नलिखित किसी राग में एक ठुमरी या धुन-
पीलू, भैरवी और खमाज।

(५) निर्धारित राग समूहों की समानता विभिन्नता, अल्पत्व-बहुत्व और आविर्भाव-तिरोभाव प्रदर्शन की क्षमता।

(६) आलाप सुनकर राग पहचानने की क्षमता।

(७) (क) पूर्व वर्षो के पाठयक्रम में निर्धारित तालों की ठाह, दुगुन तिगुन, चौगुन और आड़ लय को हाथ पर ताली खाली

दिखला कर बोलने का अभ्यास।

(ख) गंजझपा, मत ताल, आडाचारताल, झूमरा तथा जत तालों के ठेकों के बोल बोलनें का अभ्यास।

टिप्पणी- पूर्व वर्षो का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।

संगीत विशारद पूर्ण

Sangeet Visharad Final (Fifth Year)

तंत्रवाद्य (INSTRUMENTAL)

पूर्णांक: ३०० शास्त्र- १००, द्वितीय प्रश्न पत्र-५०
(प्रथम प्रश्न-पत्र-५०, क्रियात्मक-१२५)
मंच प्रदर्शन-७५

शास्त्र (Theory)

प्रथम प्रश्न पत्र (First Paper)

(१) निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा-
आविर्भाव, तिरोभाव, कलावन्त, वाग्गेयकार, ध्रुपद की वाणी स्व-स्थाननियम, नायक गायक, वाणी, मेजर टोन, माइनर टोन, कार्ड, हारमनी, मैलोड़ी, मुखचालन ग्राम तथा मूर्छना।

(२) गमक के विभिन्न प्रकार एवं हिन्दुस्तानी वाद्यों के विभिन्न प्रकार (तत अवनद्ध घन और सुशिर)

(३) राग वर्गीकरण का पूरा इतिहास, उसका महत्व और विभिन्न भेदों में पारस्परिक तुलना।

(४) सितार के घरानों का इतिहास तथा वादन शैली एवं अन्य वाद्ययन्त्रों की वादन शैली की विशिष्टता।

(५) सहायक नाद, डायटोनिक स्केल (Diatonic Scale), पाईथागोरियन स्केल(Pythagorian Scale), समस्वरान्तक सप्तक (Tempered Scale) इत्यादि का ज्ञान।

(६) हारमोनियम प्रयोग की सार्थकता एवं आलोचना।

(७) हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत पद्धति के राग, स्वर और तालों की तुलना।

(८) तंत्र वादन के घरानों का संक्षिप्त इतिहास और उनकी वादन शैली की विशिष्टता के सम्बन्ध में अध्ययन।

(९) जीवनी तथा संगीत में योगदान।
उस्ताद अल्लाउदीन खां,यदुभट, तानसेन।

द्वितीय प्रश्न पत्र (Second Paper)

(१) पूर्व वर्षो में तथा इस वर्ष में निर्धारित सारे रागों का विवरण तथा समस्त रागों के आविर्भाव तिरोभाव अल्पत्व-बहुत्व तथा समानता-विभिन्नता लिखने का अभ्यास।

(२) मसीदखानी गत, रजाखानी गत, तोड़ा और झाला लिखनें का अभ्यास।

(३) लिखित स्वर समूह देखकर राग पहचान करने की क्षमता।

(४) पाठयक्रम में निर्धारित तालों के ठेके विभिन्न लयकारियों में लिखनें का अभ्यास।

(५) हिन्दुस्तानी पद्धतियों के मुख्य सिद्वान्त एवं उनकी उपयोगिता।

(६) संगीत के विभिन्न विषयों पर निबन्ध लिखनें का अभ्यास।

(७) अपने वाद्य के विभिन्न घरानों का इतिहास।

(१०) पाश्चात्य वाद्यों का साधारण ज्ञान।

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित राग समूहों में पूर्ण वादन शैली के साथ रजाखानी गत बजानें का अभ्यास- निर्धारित राग- श्री,बसन्त, परज पूरिया धनाश्री, मियां मल्हार, शुद्ध कल्याण,मालगुन्जी ललित, देशी, रामकली, रागेश्री तथा गौड़ सारंग, गौड मल्हार।

(२) उपर्युक्त रागों मेंसे किन्ही पांच रागों में मसीदखानी गत जानना आवश्यक है।

(३) पाठयक्रम में निर्धारित रागों की गत निम्नलिखित तालों में बजानें का अभ्यास-

एकताल, झपताल, धमार और आड़ाचारताल।

(४) निम्नलिखित रागों में किसी भी राग में एक ठुमरी या धुन- काफी, तिलंग, देश।

(५) निर्धारित राग समूहों में समानता विभिन्नता, अल्पत्व-बहुत्व और आविर्भाव -तिरोभाव प्रदर्शन करने की क्षमता।

(६) (क) पूर्व वर्षो की समस्त तालों को विभिन्न लयकारियों में बोलने का अभ्यास।

(ख) शिखर , ब्रह्म , लक्ष्मी, फरोदस्त एवं पंचम सवारी ताल के ठेके बोलने का अभ्यास।

टिप्पणी- पूर्व वर्षो का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।